आदर्श कलीसियाओं की एक तस्वीर

प्रेरितों के काम ही एक ऐसी पुस्तक है जो बताती है कि प्रभु की कलीसिया की मण्डलियां कैसे आरम्भ हुईं। सबसे पहली मण्डली यरूशलेम में आरम्भ हुई थी (अध्याय 2); और प्रेरितों तथा दूसरे मसीहियों के उस नगर से बाहर जाने से प्रभु की कलीसिया की अन्य मण्डलियों की स्थापना भी होने लगी थी। प्रत्येक नगर में कलीसिया की स्थापना सुसमाचार के परिणामस्वरूप हुई थी।[1]

कलीसिया के इस आदर्श का अध्ययन उन महत्वपूर्ण पहचान चिह्नों को दिखाता है जो बाद की सभी पीढ़ियों द्वारा सम्मानित किए जाने चाहिए थे। नये नियम के दिनों में, प्रचारक आत्मा की तलवार के रूप में अपने साथ केवल वचन को लेकर ही जाते थे (इफिसियों 6:17)। उनके पास कोई धर्मसार, प्रार्थना की पुस्तकें, मैनुयल, कैटेकिज़्म (बाइबल के अतिरिक्त शिक्षा देने की पुस्तक) या नये क्षेत्रों में कलीसियाएं स्थापित करने के लिए आधिकारिक सामग्री की कोई पुस्तक नहीं थी।

क्या आज सुसमाचार प्रचार के लिए यही ढंग अपनाया जाता है? प्रेरितों के काम की आदर्श कलीसियाओं को निकटता से देखना ठीक रहेगा।

स्व-संचालित

जैसे कि पहले प्रत्येक मण्डली में प्राचीनों के काम को देखा गया है, नई-नई बनी मण्डलियां अपना प्रबन्ध स्वयं ही चलाती थीं। प्रेरितों के काम के अध्याय 2 वाले पिन्तेकुस्त के दिन के लगभग पन्द्रह वर्षों बाद प्राचीनों[2] का पहला उल्लेख मिलता है। प्रेरितों 11:28-30 के अनुसार उस समय अन्ताकिया के साथी मसीहियों की ओर से यहूदिया के जरूरतमंद मसीहियों के लिए परोपकार स्वरूप सहायता भेजी गई थी। अन्ताकिया के सदस्यों ने पौलुस और बरनबास को अपने संदेशवाहकों के रूप में भेजा था और धन विशेष रूप से प्राचीनों के हाथों में सौंपा गया था। स्पष्टत: कलीसिया का प्रबन्ध प्राचीनों के हाथ में ही था।

इस वृत्तांत में किसी कलीसिया में प्रेरित के अलावा किसी भविष्यवक्ता का पहली बार उल्लेख भी शामिल हुआ है (प्रेरितों 11:27)। परन्तु, जरूरी नहीं कि इसका अर्थ यह हो कि कलीसिया के काम को बढ़ाने के लिए परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को पहली बार सेवा दी हो।

बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि यरूशलेम या यहूदिया की दूसरी कलीसियाओं में प्राचीनों ने काम करना कब आरम्भ किया। आरम्भ में कलीसिया की अगुआई प्रेरित ही करते थे, क्योंकि विधवाओं की देखरेख के मामले में उन्होंने ही अगुआई की थी (प्रेरितों 6:1-4)। यरूशलेम में अभी प्राचीनों की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि प्रेरित तो वहां थे ही। आत्मा की प्रेरणा से मिलने वाली उनकी अगुआई से, यह आरम्भिक मण्डली खूब फली फूली थी। परन्तु, यह स्थिति स्थाई नहीं थी, क्योंकि प्रेरितों को दूसरी जगह काम करने के लिए बुला लिया गया था। फिर, सुसमाचार के सारे रोमी जगत में फैल जाने पर प्रेरित हर जगह नहीं जा सकते थे; न ही प्रेरितों ने भावी सदियों की मण्डलियों में होना था। इसलिए, परमेश्वर ने अपने लागों की अगुआई करने के लिए एक स्थाई प्रबन्ध की योजना बनाई।

पौलुस और बरनबास के प्रयासों से एशिया माइनर में स्थापित कलीसिया की हर एक मण्डली में प्राचीनों की नियुक्ति का उल्लेख प्रमुखता से किया गया है (प्रेरितों 14:23)। उत्तर की अपनी यात्रा की वापसी पर पौलुस और बरनबास ने हर एक मण्डली में प्राचीनों की नियुक्ति कर दी। आलोचक इस बात पर प्रश्न उठाते हैं, क्योंकि प्राचीन होने के लिए शर्त है कि वह ''नया चेला'' न हो (1 तीमुथियुस 3:6)। इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबा के लोग कुछ ही माह पहले मसीही बने होंगे; और कुछ लोग इसे प्रमाण के रूप में लेते हैं कि कभी-कभी नौसिखियों को भी प्राचीन नियुक्त किया जाता था।

ऐसा नहीं है, क्योंकि उस समय परिवर्तित होने वाले लोग इब्रानियों में से होते थे जो जीवन भर मूसा की व्यवस्था को मानते आ रहे थे। आराधना करने और परमेश्वर के पीछे चलने में उनकी आत्मिक परिपक्वता के कारण वे प्रेरितों के प्रचार से पहली बार परमेश्वर के बारे में सुनने वालों से कहीं ऊपर थे। जब ऐसे इब्रानी लोगों को यीशु के सुसमाचार का पता चला, तो नई सच्चाइयों को ग्रहण करके उन्हें छुटकारे का सही ज्ञान प्राप्त हो गया था। अपने आत्मिक अनुभव और परिपक्वता के कारण वे उन लोगों की अगुआई कर पाए जो पहले मूसा की व्यवस्था के अधीन उस पर से परमेश्वर की सेवा नहीं कर रहे थे।

यरूशलेम के प्राचीनों का दोबारा उल्लेख तब आता है जब पौलुस को उनके पास खतने की समस्या पर चर्चा करने के लिए भेजा गया था (प्रेरितों 15:1, 2)। तीसरी यात्रा में, इफिसुस के प्राचीनों का उल्लेख प्रमुखता से आता है जब पौलुस उनसे मिलेतुस में मिला था (प्रेरितों 20:17)। तीसरी यात्रा के अन्त में विशेष बिनती पर पौलुस याकूब और यरूशलेम के प्राचीनों से मिला था (प्रेरितों 21:17-26)। फिर तो, अपनी कलीसियाओं के स्थाई संचालन के लिए परमेश्वर की योजना यह है कि प्रत्येक मण्डली में से कुछ ऐसे लोग हों कि वे आत्मिक परिपक्वता और उस पद पर सेवा करने के योग्य होने पर अगुआई कर सकें।

प्रेरितों के काम में दर्ज मण्डलियां स्वतन्त्र रूप से काम करती थीं। प्रत्येक मण्डली के अपने प्राचीन थे (प्रेरितों 14:23)। फिलिप्पी के मसीही लोगों के नाम पौलुस के पत्र में

विशेषकर ''अध्यक्षों [बिशप्स] और सेवकों [डीकन्स]'' को सम्बोधित किया गया था (फिलिप्पियों 1:1)। इफिसुस के प्राचीनों को अपनी चौकसी के साथ-साथ अपने लोगों की रखवाली करने के लिए भी कहा गया था (प्रेरितों 20:28)।

एक और स्वतन्त्र कार्य मिलता है जब कुरिन्थुस के मसीहियों को उनमें पाए जाने वाले व्यभिचार की समस्या से निपटने के लिए कहा गया था (1 कुरिन्थियों 5)। कुरिन्थुस की कलीसिया को यरूशलेम या किसी और जगह की मण्डली से अपील नहीं करनी थी; उसके सदस्य अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सकते थे।

मण्डलियां एक दूसरे के साथ सहयोग करके भी काम करती थीं। उदाहरण के लिए, अन्ताकिया से यहूदिया के लिए सहायता भेजी गई (प्रेरितों 11:28-30)। जब पौलुस थिस्सलुनीके में प्रचार कर रहा था, तो किसी और कलीसिया ने उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया (फिलिप्पियों 4:15)। यहूदिया में ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए दान इकट्ठा करने के एक महान कार्य में, कलीसियाओं ने एक दूसरे के साथ सहयोग करके उन लोगों को चुना जिनके हाथ धन भेजा जाना था (2 कुरिन्थियों 8:19-23)।

शास्त्र में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि कलीसियाओं ने किसी भी प्रकार या किसी भी समय निर्णय लेने के लिए कोई दल बनाया हो। उनका कोई संगठन नहीं था, कोई डायोसिस नहीं थी और न ही कोई मुख्यालय था जिससे वे सलाह लेते। वे एक ही कलीसिया के रूप में आपस में सहयोग करते थे। वे एक ही प्रकार की शिक्षाओं को मानते थे और उन पर ही चलते थे, और उनका आराधना करने का ढंग भी एक सा था; क्योंकि वे एक ही सुसमाचार का प्रचार करते थे। सुसमाचार की व्याख्या बीज के रूप में करते हुए यीशु ने सांकेतिक भाषा का उपयोग किया (लूका 8:4-15) तथा उन्होंने वही बीज बोया और, इसलिए वही फसल भी काटी।

प्रेरितों के काम में मिलने वाली कलीसियाएं स्वतन्त्र और स्वायत्त तो थीं ही, परन्तु आपस में सहयोग भी करती थीं।

स्वतः बढ़ने वाली

अन्ताकिया में सुसमाचार यरूशलेम से लाया गया था (प्रेरितों 11:19-26)। यरूशलेम की कलीसिया ने इस नये समूह की सहायता के लिए बरनबास को भेजा (आयतें 22-24) और बरनबास ने वहां अपने साथ रहने के लिए पौलुस को ढूंढ़ लिया (आयतें 25, 26)। वहां वे दोनों ''बहुत से लोगों को'' समझाने में सफल हुए (आयत 26)।

बाद में, बरनबास और पौलुस को अन्ताकिया से सुसमाचार का प्रचार करने के लिए दूसरे नगरों में भेज दिया गया था (प्रेरितों 13:1-3)। पहली यात्रा समाप्त करके पौलुस अन्ताकिया में लौट आया और आकर उसने कलीसिया को बताया कि उसे क्या-क्या हुआ था (प्रेरितों 14:26, 27)। वह अगली यात्राओं के विषय में अन्ताकिया में बताता रहा (प्रेरितों 18:22, 23), सो उसकी ये मिशनरी यात्राएं अन्ताकिया की मण्डली के काम का एक भाग बन गई थीं। वे सुसमाचार को अन्य स्थानों में भी ले जाना चाहते थे।

पौलुस ने फिलिप्पी में कलीसिया स्थापित की और उस मण्डली ने अन्य स्थानों में प्रचार करने में उसकी सहायता की (प्रेरितों 16:12-15; फिलिप्पियों 4:15-18)। जब पौलुस इफिसुस में प्रचार कर रहा था, तो वहां के मसीहियों ने पूरे एशिया माइनर में वचन को फैलाने में उसकी सहायता की (प्रेरितों 19:10)। कुलुस्से की कलीसिया का काम यह देखना था कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पौलुस के पत्रों को लौदिकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए (कुलुस्सियों 4:16)। फिर, थिस्सलुनीके की कलीसिया से मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन पहुंचा। पौलुस ने कहा, ''तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)।

जहां भी कलीसियाएं स्थापित हुईं, वहीं से नये मसीहियों ने जहां भी सुसमाचार का प्रचार किया जा सकता था, करने में सहायता की और अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार किया। अन्य नगरों तथा देशों में कलीसिया को बढ़ाने की उनकी लगन के कारण पहली शताब्दी में सुसमाचार जल्दी ही सारे जगत में फैल गया (कुलुस्सियों 1:23)।

अपनी सहायता आप करने वाली

बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि आरम्भिक कलीसियाएं अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए किसी और मण्डली से मिले धन पर निर्भर थीं। कलीसियाएं एक दूसरे के बोझ को कम करने के लिए सहायता भेजती थीं।[3] वित्तीय सहायता के दो उद्देश्य होते थे: दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना और प्रचारकों की सहायता करना। हर उद्देश्य के लिए, भेजी जाने वाली यह सहायता स्थाई नहीं थी।

ज़रूरतमंद कलीसिया फिर भी स्वतन्त्र थी और किसी प्रकार की सहायता मिलने या न मिलने पर भी प्रभु के नाम पर चल रही थी। पौलुस अपनी सहायता स्वयं करके प्रचार करता रहा (प्रेरितों 18:1-4)। कोई आर्थिक सहायता न मिलने पर भी, कलीसियाएं कलीसियाएं ही रहीं और प्रचारक सुसमाचार का प्रचार करते ही रहे। प्रेरितों के काम में किसी ''कल्याणकारी चर्च'' का नाम नहीं है, और न ही कहीं कोई ऐसी शिक्षा है जिससे लगता हो कि परमेश्वर ने कलीसिया को इस प्रकार से चलाने के लिए बनाया था।

कलीसिया के लिए नये भवनों के निर्माण तथा प्रचारकों की सहायता के लिए मिशन क्षेत्र में इतना पैसा लगाने का कारण आम तौर पर संस्कृतियों और आर्थिकताओं में भिन्नता बताया जाता है। क्या यही भिन्नताएं पहली शताब्दी में नहीं थीं? भिन्नताएं तो थीं, परन्तु पौलुस और दूसरे लोग संसार में *सामान* नहीं, बल्कि *सुसमाचार* लेकर गए थे।

आज बहुत से मिशन क्षेत्रों में जिस प्रकार से कलीसियाएं कार्य कर रही हैं, नये नियम में उनका कोई उदाहरण नहीं है। अमेरिका के उत्तरी तथा उत्तर-पश्चिमी राज्यों की कलीसियाओं में आम तौर पर देखा जाता है कि वे वर्षों से प्रचारकों को वेतन देने तथा अपने लिए भवन बनाने के लिए दक्षिणी राज्यों पर निर्भर होती हैं।

संसार के दूसरे भागों में भी यही बात सत्य है। दशकों से भवन बनते आ रहे हैं

और प्रचारकों को वेतन मिल रहा है; कुछ नई मण्डलियों ने स्वतन्त्र होने का छोटा सा प्रयास किया है। अन्य देशों के प्रचारकों को अमेरिका के स्कूलों में भर्ती किया जाता है और अमेरिका की कलीसियाओं की ओर से इनकी आर्थिक सहायता की जाती है और इनके ग्रेजुएट होने पर प्रचार के लिए अपने देश वापस जाने के लिए निरन्तर सहायता की आवश्यकता होती थी। हो सकता है उनके दिमाग में यह बात न आई हो कि कलीसियाएं प्रबन्ध करने के साथ-साथ वित्तीय मामलों में भी स्वतन्त्र होनी चाहिए। अमेरिका से वित्तीय सहायता पर इतने ज़ोर के कारण, नये प्रचारक, शिक्षक और मसीही अपने आप ही सोचेंगे कि प्रभु की कलीसिया ''अमेरिकी कलीसिया'' है और, इसलिए अमेरिका से आर्थिक सहायता से उम्मीद करना सही है। कल्याणकारी मानसिकता बनाने के लिए और किस बात की आवश्यकता है ?[4]

यदि इन मिशन क्षेत्रों में अमेरिकी धन न जाता, तो क्या होता? क्या विश्वास से आराधना जारी रहती ? क्या लोग सुसमाचार का प्रचार करते रहते ? कितनी मण्डलियां इकट्ठा होना बन्द कर देतीं ? कितने प्रचारक प्रचार करना बन्द कर देते या किसी साम्प्रदायिक कलीसिया के लिए प्रचार करने लगते जिनसे उन्हें वेतन मिलने की सम्भावना होती ? यही प्रश्न अमेरिका के उन बहुत से प्रचारकों की ''छंटनी'' कर देगा जो सुसमाचार को फैलाने की भावना को जीवन भर की बलिदानपूर्वक वचनबद्धता न मानकर एक व्यवसाय समझते हैं ! पौलुस की किसी कलीसिया ने सहायता की या नहीं, परन्तु उसने प्रचार किया; आज कितने लोग ऐसा करेंगे या कर रहे हैं ?

आज अमेरिका में उन पथप्रदर्शक मसीहियों की पीढ़ी के कारण मजबूत कलीसियाएं हैं जो प्रभु की सेवा के निमित्त कुर्बान होना चाहते थे। लोग बिना किसी वेतन या जेब खर्च के ''सारा दिन हल चलाते और रात को प्रचार करते थे।'' परमेश्वर की आराधना करने के लिए अपनी इमारत बनने से पहले मसीही लोग छोटे-छोटे घरों में, स्कूलों में, किराये के गोदामों में और यहां तक कि पेड़ों के नीचे इकट्ठे होते थे। अमेरिका के मसीही आज ''उस आग को सेंक रहे हैं जो उन्होंने नहीं जलाई थी।'' यह आग पिछली पीढ़ियों के उन महान बलिदानों से प्रज्वलित हुई है जिन्होंने आराधना को अगली पीढ़ियों के लिए इतना सुगम तथा आसान बना दिया है। इन संघर्षों के कारण बड़े मज़बूत अगुवे और मज़बूत कलीसियाएं बनीं। उन पथप्रदर्शकों ने एक पगडंडी बना दी थी।

अमेरिकी कलीसियाएं कई प्रकार से सहायता कर सकती हैं, परन्तु नई मण्डलियों को संघर्ष और बलिदान के द्वारा अपने अन्दर भी पथप्रदर्शक की आत्मा विकसित करनी चाहिए। धनी मण्डलियों के मसीही इसी बात पर घमण्ड करते हैं कि मिशन क्षेत्र में जो कुछ भी आवश्यक है उसे धन से पूरा किया जा सकता है।

एक छोटे उदाहरण से सहायता मिल सकती है। यदि अपने माता-पिता के जैसा जीवन गुजारने के लिए नवविवाहित दम्पत्ति को माता-पिता ही सब आर्थिक सहायता दें तो इसमें क्या बड़ी बात है ? यदि ऐसा कई वर्षों तक चलता रहे और उस दम्पत्ति को काम न करना

पड़े तो इस दम्पत्ति में परिपक्वता, स्वतन्त्रता और नेतृत्व का क्या गुण आएगा? कोई नहीं! इसके विपरीत माता-पिता की ऐसी उदारता इस युवक दम्पत्ति को एक स्वतन्त्र परिवार बनने का अवसर न देकर पंगु बना देगी। यदि नवविवाहित दम्पत्ति के लिए यह बात सही है, तो क्या मिशन कार्य और नई कलीसियाओं के लिए भी यह बात सत्य नहीं है?

सारांश

यदि हम 21वीं शताब्दी में आदर्श कलीसियाएं चाहते हैं, तो हमें प्रेरितों के काम में मिलने वाले नमूने का सम्मान करना चाहिए। हमें परमेश्वर का कार्य परमेश्वर के ढंग से ही करना चाहिए। यदि कोई मण्डली शास्त्र और परमेश्वर के वचन के नमूने के अनुसार है तो वह अपना प्रबन्ध आप करने वाली, अपने आप बढ़ने वाली और अपनी सहायता आप करने वाली होनी चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]इस भाग में ''कलीसिया का आना'' पाठ देखिए। [2]इस भाग में ''परमेश्वर का नया प्रबन्ध'' देखिए। [3]''प्रेम भरा परोपकार'' पाठ देखिए। [4]अमेरिका में यह ''कल्याणकारी मानसिकता'' सरकारी कल्याण में पाई जाती है, और संसार में सुसमाचार फैलाने के प्रयास के लिए यही सोच मसीही लोगों के दिमाग़ों में आ गई है।